तूलिका

वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका

2022-23

प्रकाशक

प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा I

एवं

प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा II

तृशूर शाखा

प्रकाशन	:	तूलिका वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका
प्रकाशक	:	प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा I&II
अंक	:	इकतीसवां
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा
मुद्रणालय	:	मैक वर्ल्ड, तृशूर

आवरण पृष्ठ चित्र - श्री मुरलीधरन एम. (पर्यवेषक)

पत्रिका में प्रस्तुत विचार, रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार है। संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं।

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

डॉ. बिजु जेकब

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

संरक्षक

सुश्री अनिम चेरियान

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

संपादक मंडल

मुख्य संपादक

श्री के जे टॉमी

वरिष्ठ उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-III)

परामर्शदाता

श्री राहुल पा

वरिष्ठ उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-I)

सदस्य

श्री जिजो बास्ट्यन

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री सी राजेन्द्रन

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती जे आर आशा

हिंदी अधिकारी

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका

हिंदी अधिकारी

श्रीमती बबिता

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्रीमती टी वी राधिका

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्रीमती अनिता दास

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

संदेश

हमारी गृह पत्रिका 'तूलिका' का नवीन अंक सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में हमारा कार्यालय निरंतर प्रयासरत है। हमारे मुख्य कार्यालय से प्रकाशित ई-गृह पत्रिका 'सविता' के साथ ही 'तूलिका' का सफल प्रकाशन हमारे कार्यालय के पदाधिकारियों का राजभाषा के प्रति प्यार दर्शता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और आज़ादी के अमृत काल में हमारी पत्रिका का नया अंक राजभाषा के चमकते आसमान में एक और तारा देदीप्यमान करने के समान है। कार्यालयीन सांस्कृतिक-सामाजिक गतिविधियों को समर्पित 'तूलिका' का यह अंक ज़िंदादिली से तैयार करने के लिए मैं संपादक मंडल को बधाई दती हूँ। कार्यालय में पिछले कुछ समय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों को इस अंक में समेटा गया है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिन्द। जय हिन्दी।

अनिम चेरियान

अनिम चेरियान

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

संदेश

आज़ादी के अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर हमारी वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'तूलिका' का 31वां अंक आप के समक्ष अतीव हर्ष के साथ प्रस्तुत करता हूँ।

अमृत महोत्सव प्रगतिशाली संस्कृति, सभ्यता और समृद्ध इतिहास की महत्वपूर्ण उपलब्धियों के 75 वर्ष पूरे होने का जश्न मनाने के लिए भारत सरकार की एक पहल है। हमें अपनी देशीयता के प्रतिनिधित्व करने वाले सभी तत्वों पर गर्व करना चाहिए और उनका सम्मान करना चाहिए। इनमें अपनी मिट्टी की भाषा का स्थान, चाहे वह मातृभाषा हो या राजभाषा, बड़ा महत्वपूर्ण है। विभागीय पत्रिकाओं का मुख्य उद्देश्य सरल हिंदी में रचे गए लेखों के माध्यम से हिंदी के साथ तादात्म्य स्थापित करना एवं तल्लीनता का अनुभव कराना है। मुझे इस बात की खुशी है कि 'तूलिका' अपने नाम को सार्थक करते हुए पदाधिकारियों के मन में हिंदी प्रेम का सुंदर तस्वीर बनाने में कामयाब हुई है। पत्रिका के सफल प्रकाशन से जुडे सभी पदाधिकारियों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ और उसकी सफलता के लिए मंगलकामनाएं देता हूँ।

बिजू जेकब

डॉ. बिजू जेकब

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

संदेश

हमारी कार्यालयीन पत्रिका 'तूलिका' के नए अंक का विमोचन अत्यंत हर्ष का विषय है। राजभाषा के कार्यान्वयन की दिशा में हिंदी पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है। हिंदी की व्यवहारिकता और सर्वग्राह्यता में वृद्धि हमारे कार्यालय के कार्मिकों की भागीदारी का परिणाम है 'तूलिका'। 'तूलिका' का निरंतर प्रकाशन करना राजभाषा के प्रति हमारा दायित्व ही नहीं बल्कि आदर और सम्मान का प्रतीक भी बन जाता है। इस अंक में विभिन्न साहित्यिक विधाओं में अभिव्यक्ति को हिंदी माध्यम में साकार रूप दिया है। हिंदीतर भाषियों का हिंदी में लेखन विशेष रूप से प्रशंसनीय है। पत्रिका के सफल प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों व रचनाकारों को उनके सराहनीय प्रयास के लिए हार्दिक बधाई एवं अभिनंदन।

जय हिन्द। जय हिन्दी।

राहुल

राहुल पा

उप महालेखकार (ए एम जी I)

संदेश

हिंदी गृह पत्रिका 'तूलिका' का 31वां अंक सुधी पाठकों के समक्ष समर्पित है। यह अतीव प्रसन्नता का विषय है कि हमारी हिंदी गृह पत्रिका का नवीन अंक इस अमृत काल के दौरान प्रकाशित हो रहा है।

हिंदी पत्रिका का उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रति निष्ठा की भावना को मजबूत करना और सरल और बोधगम्य हिंदी को बढावा देना है और विभागीय पत्रिकाएं सरकारी कर्मचारियों को सहजता के साथ हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन करती आयी हैं। हमारी 'तूलिका' भी हिंदी भाषा और कर्मियों को आपस में एक सूत्र में बांधने की भूमिका भली-शांती निभायी है। अपनी रचनात्मकता से पत्रिका को सजाने वाले सभी का आभार और संपादक मण्डल को बधाईयाँ... उम्मीद है कि 'तूलिका' इसी प्रकार नए चित्र रचती रहेगी..

टोमी

के.जे. टोमी

वरिष्ठ उप महालेखाकार (ए एम जी III)

तूलिका

अनुक्रमणिका

संस्कृत भाषा की जीवंतता और स्थायित्व 11
दीपक के वी
सहायक पर्यवेक्षक

भारतीय संस्कृति की निरंतरता 12
देविका के दीपक
सुपुत्री दीपक के वी, सहायक पर्यवेक्षक

शिक्षा का महत्व 13
क्रिस्टो जॉय
लेखापरीक्षक

टूटा शीशा 14
गोपीका के
लेखापरीक्षक

वैभव मोहिनी 15
मंजू सी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

केरल के सिनेगॉग 18
नीनु एस डी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

दीपावली 20
अर्जित कृष्ण पी
सुपुत्र सुरेष पी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

भारतीय समाज 21
भद्रा आर
सुपुत्री सी राजेन्द्रन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

तितली का संघर्ष 32
आदर्श डी
सुपुत्र दिनाराज एम.के., सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जल जीवन मिशन 33
गोडसण पोल एन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बुद्धिमान हक्कू 36
मुहम्मद यशल एम
सुपुत्र हसीना पी पी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बुद्धिमान बूढा 37
श्रीलक्ष्मी सुधीर
सुपुत्री सुधीर आर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

केरल - भगवान का अपना देशे 38
कुमारी अंजना
सुपुत्री जोजू एफ्रेम, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

योग 40
अनिलकुमार ई के
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पिता मेरी हिम्मत! 42
अनुप्रिया अनिल
सुपुत्री अनिलकुमार ई.के., वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मन 43
मणिकण्ठन वि के
सहायक पर्यवेक्षक

डूबते को सहारा 44
हसीना पी पी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

महिला सशक्तिकरण 45
अश्वनि अनिलकुमार
सुपुत्री अनिलकुमार ई.के., वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मूवी रिव्यू : ऊंचाई 47
शरण्या
सुपुत्री श्रीदेवी वि.वि., सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

शेर और तीन बैल 49
नैनानिका
सुपुत्री रंजित्त आर, लेखापरीक्षक

पुस्तक परिचय कई दीपों से रोशनी 50
बिजु श्रीधर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रकृति संदेश 52
हेलन तोमस
एमटीएस

संपादक मंडल की ओर से

जिजो बास्ट्यन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

'तूलिका' का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करने हुए आपार हर्ष और गौरव की अनुभूति हो रही है। भारत जैसे विविधता से संपन्न देश की जनमानस की वाणी है हिंदी, वह हमारी संस्कृति और परंपरा से जुडी हुई भाषा है। संपूर्ण देश में एकता की भावना को उजागर करने में हिंदी का अनुपम स्थान है। इस दिशा में कार्यालयीन पत्रिकाएं राजभाषा के संवर्धन में महात्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हमारे कर्मचारियों ने कार्यालयीन कर्तव्यों के निर्वहन के साथ-साथ अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम के लिए भी हिंदी चुनने का सराहनीय कार्य किया है। राजभाषा के प्रति हमारे निष्ठा का परिचायक 'तूलिका' के इस नवीनतम अंक में हमने कार्यालय के विभिन्न गतिविधियों, भारतीय संस्कृति संस्कृति से जुडे लेख, कविताएं, कहानी, बच्चों की रचनाएं, आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं को संकलित किया है। हमारी प्रतीक्षा है कि विगत अंकों की भांति यह अंक भी पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु आपके बहुमूल्य सुझावों का सादर स्वागत है।

दीपक के वी
सहायक पर्यवेक्षक

संस्कृत भाषा की जीवंतता और स्थायित्व

संस्कृत अद्भुत रूप से समृद्ध भाषा है-अत्यंत विकसित और नाना प्रकार से अलंकृत। इसके बावजूद वह नियम और व्याकरण के उस ढांचे में सख्ती से जकड़ी है जिसका निर्माण 2600 वर्ष पहले पाणिनि ने किया था। इसका प्रसार हुआ, संपन्न हुई, फूली-फली और अलंकृत हुई पर इसने अपने मूल को नही छोड़ा। संस्कृत साहित्य के पतन के काल में भाषा ने अपनी पूरी शक्ति और शैली को खो दी।

सर विलियम जोन्स ने 1784 में कहा था - "संस्कृत भाषा चाहे जितनी पुरानी हो, इसकी बनावट अद्भुत है, यूनानी भाषा के मुकाबले यह अधिक पूर्ण है लेटिन के मुकाबले अधिक उत्कृष्ट है और दोनों के मुकाबले अधिक परिष्कृत है पर दोनों के साथ वह इतनी अधिक मिलती जुलती है कि यह संयोग आकम्मिक नहीं हो सकता। यह साफ पहचाना जा सकता है कि इन सभी भाषाओं का स्रोत एक ही है, जो शायद अब मौजूद नहीं रहा है।

संस्कृत आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी है। उनका अधिकांश शब्दकोश और अभिव्यक्ति का ढंग संस्कृत की देन है। संस्कृत काव्य और दर्शन के बहुत से सार्थक और महत्वपूर्ण शब्द, जिसका विदेशी भाषाओं में अनुवाद नहीं किया जा सकता, आज भी हमारी लोक प्रचलित भाषाओं में जीवित है।

देविका के दीपक
सुपुत्री दीपक के वी
सहायक पर्यवेक्षक

भारतीय संस्कृति की निरंतरता

हमें आरंभ में ही एक ऐसी सभ्यता और संस्कृति की शुरूआत दिखाई पड़ती है जो तमाम परिवर्तनों के बावजूद आज भी बनी हुई है। इसी समय मूल आदर्श आकर ग्रहण विश्व दृष्टि करने लगते है और साहित्य और दर्शन, कला और नाटक तथा जीवन के और तमाम क्रियाकलाप इन आदर्शों और विश्व-दृष्टि के अनुकूल चलने लगते हैं। इसी समय उस विशिष्टतावाद और छुआछूत की प्रवृत्ति का आरंभ दिखाई पड़ता है जो बाद में बढ़ते बढ़ते असहाय हो जाती है। यही प्रवृत्ति आधुनिक युग की जाति व्यवस्था है। यह व्यवस्था एक खास युग की परिस्थिति के लिए बनाई गई। इसका उद्देश्य था उस समय की समाज व्यवस्था को मज़बूत बनाना और उसे शक्ति और संतुलन प्रदान करना। किंतु बाद में यह उसी समाज व्यवस्था और मानव मन के लिए कारागृह बन गया था।

फिर भी यह व्यवस्था लंबे समय तक बनी रही। उस ढांचे के भीतर बंधे रहते हुए भी सभी दिशाओं में विकास करने की मूल प्रेरणा इतनी प्राणवान थी कि उसका प्रसार सारे भारत में और उससे आगे बढ़कर पूर्वी देशों तक हुआ।

इतिहास के इस लंबे दौर में भारत अलग थलग नहीं रहा। ईरानियों और यूनानियों से, चीनी और मध्य एशियाई तथा अन्य में उसका संपर्क बराबर बना रहा। तीन-चार हज़ार वर्षों का यह सांस्कृतिक विकास और उसका अटूट मेल मिलाप अद्‌भुत है।

क्रिस्टो जॉय
लेखापरीक्षक

शिक्षा का महत्व

शिक्षा हम सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक उपकरण है। यह स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान रूप से आवश्यक है। अच्छी शिक्षा जीवन में बहुत से उद्देश्यों को पूरा करती है। शिक्षा लोगों के मस्तिष्क को उच्च स्तर पर विकसित करने का कार्य करती है। आधुनिक तकनीकी संसार में शिक्षा मुख्य भूमिका निभाती है। शिक्षा का समय सभी के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत रूप से बहुत महत्वपूर्ण समय होता है। नियमित और उचित शिक्षा हमें जीवन में लक्ष्य को बनाने के सफलता के द्वार की ओर ले जाती है। उच्च शिक्षा से सभी के लिए अच्छी और तकनीकी नौकरी के अवसर उपलब्ध होते है। ऊंची नौकरियां प्राप्त करने के लिए यह बहुत ही आवश्यक है। शिक्षा हमारे लिए बहुत जरूरी है इसकी वजह से हमें हमारे समाज में सम्मान मिलता हें। शिक्षा हमारे जीवन में इतना महत्व रखती है।

गोपीका के
लेखापरीक्षक

टूटा शीशा

मैं हूं आपका प्रिय शीशा
अरे माफ कीजिए मैं यह भूल गया अब मैं आपके लिए प्रिय नहीं हूँ
अब आप मुझे अशुभ मानते हो
रोज़ देखते थे मुझे कितने सुंदर थे आप
मैं आपकी सुंदरता देखकर बहूत खुश था
पहले सब लोग मुझे शुभ मानकर बहूत प्यार करते थे
लेकिन अब कोई भी मुझे पसंद नहीं करता तो
देखते भी नहीं
फेंक दिया मुझे, दर्द से मैं रो रहा था
कौन सुनेगा मेरी रुदन
आपकी गलतियों को मैंने बताया था
सबको मैंने सुधार दिया।
तुम मुझे बहुत प्यार करते थे फिर भी फेंक दिया मुझे
क्यों? क्योंकि अब मैं एक टूटा हुआ शीशा हूं
किसने किया यह काम मैं नहीं आपने किया
फिर भी मुझे फेंक दिया और अशुभ माना लेकिन मैं जानती हूं आपने
गलती से मुझे तोड़ा
मैं नहीं करूँगी शिकायत आपसे
मेरी शिकायत सिर्फ यह है
कि हमारे बीच का रिश्ता गलतफ़हमियों से टूट गया
मैं हूं शीशा टूटा हुआ शीशा।

मंजू सी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

वैभव मोहिनी

बौद्धिक व्यवहार, से अपरिष्कृत से परिष्कृत तरीके की ओर जो परिणाम है उसी को संस्कृति समझा जा सकता है। 'सिंधु घाटी सभ्यता' महत्वपूर्ण भारतीय संस्कृति की नींव है।

भारत प्राकृतिक रूप से सुंदर है, राष्ट्रगान एवं राष्ट्रगीत उसकी शान हैं। विदेशी लोग भारतीय संस्कृति का सम्मान करते हैं और उसे आत्मसात करने का प्रयास करते हैं। विश्व में कला, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में भारत का योगदान अपार है।

जबकि अन्य लोग भारतीय विज्ञान कला जैसे (भरतनाट्यम) तमिलनाडु , केरल (कथकली, और मोहिनीअट्टम), उत्तर प्रदेश (कत्थक), आंध्र प्रदेश (कुचिपुड़ी), ओडीशा (ओड़ीसी), मणिपुर (मणिपुरी), असम (सतरिया), आदि की ओर आकर्षित होते हैं। उसी तरह और भी अन्य अत्यंत सुंदर कला रूप हैं जो पारंपरिक कला रूप, अर्ध-शास्त्रीय कला रूप और लोकनृत्य में आ जाते हैं। जैसे त्रिपुरा का होजगिरी, सिक्किम का 'सिंधी छम', असम का 'बिहू'. पंजाब का 'भांगड़ा' गुजरात का 'गरबा' हरियाणा का 'सांगू' हिमाचल प्रदेश का 'नाटी' अरुणाचल प्रदेश का 'बारडो छम, बिहार का 'बिदेसिय', छत्तीसगढ़ का 'करमा नाच' गोवा का 'देखनी' जम्मु कश्मीर का राऊफ, झारखंड का 'पाईका' कर्नाटक का 'डोलु कुनिथा', मध्यप्रदेश का माच, मिज़ोरम का 'चेराओ', महाराष्ट्र का 'लावणी', मेघालय का 'लाहो' (चिपिया) नागलैण्ड का चांग लो, राजस्थान का घूमर, तेलंगाना का लंबाडी, उत्तराखंड का छोलिया, पश्चिम बंगाल का 'छऊ' आदि।

भारत में सभी धर्मों के लोग मिलजुलकर रहते हैं। लोग अलग-अलग त्यौहार मनाते हैं। 'तीज' महिलाओं का त्यौहार है। प्रयाग का महाकुंभ मेला, दुनिया में सबसे अधिक लोगों द्वारा भाग लेने वाला त्यौहार है। 'सोनपुर मेला' एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है। प्रधान मरुस्थल उत्सव, बीकानेर उत्सव का मुख्य आकर्षण ऊंट है। यह विशेष उल्लेखनीय है कि यह धर्म पर आधारित उत्सव नहीं है।

अठारहवीं शताब्दी के मध्य में दक्षिण भारत के सांस्कृतिक इतिहास में एक नया अध्याय खुला। संगीत, नाटक और नृत्य जैसी ललित कलाओं में एक नया उत्साह आया और संस्कृति ने प्रसिद्धी की अभूतपूर्व ऊंचाइयों को छुआ। ठीक ही, इस काल को कर्नाटक संगीत के स्वर्ण युग के रूप में देखा गया है। इस अवधि में महान संगीतकारों ने संगीत को समृद्ध किया। उनमें से सर्वोच्च त्यागराज, मुत्तुस्वामी दीक्षितर और श्याम शास्त्री (संगीत त्रिमूर्ति) थे। यह त्यागराज थे जिन्होंने घोषण की कि 'नादोपासना' (संगीत के माध्यम से पूजा) जनता के लिए पूर्ति का सबसे सरल मार्ग है और जिन्होंने संगीत रचनाओं को व्यवस्थित किया। उनकी रचनाएं सरल और सुंदर मौखिक आकर्षक और परमात्मा के अनुभव के साथ स्पंदित होती हैं।

मुत्तुस्वामी दीक्षितर एक गायक, वीणा वादक और भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रसिद्ध संगीतकार थे। उनकी रचनाएं मुख्यत; संस्कृत में है। उन्होंने अपनी कुछ कृतियों की रचना 'मणिप्रवालम' प्रबलम (संस्कृत और तमिल को एक संयोजन) में भी की थी।

श्याम शास्त्री श्री त्याग राज के प्यारे मित्र थे। हालांकि उन्होंने मुत्तुस्वामी दीक्षितर या त्यागराज स्वामी की जितनी रचनाएं नहीं की थी, उनकी रचनाएं उतनी ही प्रसिद्ध हुई। उनकी रचनाएं लयबद्ध गर्भगान में बहुत समृद्ध हैं। उनके द्वारा रचित 300 अपूर्व गीतों में से केवल 60-70 ही आज उपलब्ध हैं।

संस्कृत के महाकवि कालिदास की रचनाएं, अभिज्ञान शाकुंतलम् विक्रमोर्वशीयम्, कुमारसंभवम्, रघुवंशम्, मेघदूतम्, आदि भारतीय साहित्य में हमेशा के लिए महान योगदान हैं।

सूरदास, तुलसीदास, कबीरदास, मीराबाई जैसे भक्त कवियों के माध्यम से हम ईश्वर की शक्ति को जानते है। भक्ति हमारे अंदर आत्मविश्वास पैदा करती है। 'रामचरितमानस' भारत के अनमोल आध्यात्मिक ग्रथों में से एक है।

2022 में 'नासा' द्वारा जारी उपग्रह चित्र हिंदू धर्म की पुस्तक 'रामायण' (आदि ग्रंथ) में वर्णित भगवान श्री राम की वानर सेना द्वारा निर्मित 'रामसेतु' (भारत और श्रीलंका के बीच का पुल होने के प्रमाण पर प्रकाश डालते हैं। भारत में कई महात्माओं का जन्म हुआ है या यहां अनेक महापुरुष हो चुके हैं। उन्होंने मानव को संस्कृति का पाठ पढ़ाया। श्री शिर्डी साई बाबा मानव रूप लेने वाले ईश्वर हैं। जिन्होंने धार्मिक एवं सामाजिक समूहों में एकता लाने के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया है। बाबा के पास बड़ी संख्या में हिंदु, पारसी, ईसाई, सिख और मुसलमान भक्त थे। भारत आध्यात्मिक चिंतन के लिए प्रसिद्ध है। श्री शंकराचार्य दुनिया को देने वाले सबसे बड़ा योगदान क्या है ऐसे चिंतन करने पर पता चलता है कि वह उनकी कृतियों में देखने का वाला वेदांत सिद्धांत है। महान दार्शनिक स्वामी विवेकानंद भारतीय संस्कृति का प्रतिरूप हैं।

भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में (साहित्य, भौतिक शाखा, चिकित्सा, रसायन विज्ञान, अर्थशास्त्र और शांति के क्षेत्र में) नोबल पुरस्कार जीते हैं। भारतीय प्रतिभाओं में, प्रकाशिकी और प्रकाश के प्रकीर्णन में सर सी. वी. रामन के काम को विश्वव्यापी मान्यता मिली और 1930 में उन्हें 'रमन प्रभाव' के लिए लोकप्रिय उनके काम के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भारतीय गणितज्ञों में से एक श्रीनिवास रामानुजन

की सबसे कीमती खोज पाई के लिए उनकी अनंत श्रृंखला थी। उनके सिद्धांत/खोज अंग्रेज़ी और यूरोपीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए और 1918 में उन्हें रॉयल सोसायटी ऑफ लंदन में चुना गया। उन्होंने गणित में कई पुस्तकें प्रकाशित की।

भारत में चालीस विश्व धरोहर स्थल हैं। भारतीय कवि टैगोर द्वारा 'अनंतकाल के चेहरे पर आँसू' के रूप में वर्णित, ताजमहल, निः संदेह मुगल वास्तुकला का शिखर है और दुनिया की सबसे शानदार इमारतों में से एक है। अपनी स्थापत्य भव्यता और सुंदरता में प्रसिद्ध ताजमहल मनुष्य की सबसे विवेकपूर्ण/गौरवपूर्ण कृतियों में गिना जाता है और सैकड़ों ब्रोशरसे यात्रा पुस्तकों से एक परिचित छवि है।

'खजुराहो' कामूक कला मूर्तियों और नक्काशीदार मंदिरों के लिए जाना जाता है। यहां का नृत्य महोत्सव भी प्रसिद्ध है।

'कोणार्क सूर्य मंदिर ब्लैक पैगोडा - अपनी अनूठी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।

'महाबलीपुरम/मामल्लपुरम' - भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है।

'वृहदीश्वर मंदिर' - भारत का सबसे बड़ा और सबसे ऊंचा मंदिर है।

'एलोरा का कैलाश मंदिर - यह मंदिर चट्टान के एक टुकड़े से उकेरी गई दुनिया की सबसे बड़ी अखंड संरचना है। उन सभी को वर्ल्ड हेरिडेज साइट में शामिल किया गया है। 'बिरला मंदिर' कई भक्तों और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करता है। 'बैल मंदिर' बैंगलोर के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है। 15 फीट ऊंचाई और 20 फीट से अधिक लंबी शानदार नंदी बैल को एक ग्रेनाईट चट्टान से उकेरा गया है और अन्य स्मारक/मंदिर भी भारत पर गर्व कराते हैं।

भारत अनेक भाषाओं का देश है। सभी भारतीय भाषाओं की भारतीयता और महिमा है जो भाषा अधिकांश लोग जानते है और समझते है वही राष्ट्रभाषा हो सकती है। हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा है। सरल भाषा, हिंदी का साहित्य उज्ज्वल है। अतः हिंदी पढ़ना और पढ़ाना हमारा धर्म है।

भारतीय संस्कृति ज्ञान की संस्कृति है। भारत की सांस्कृतिक विविधता और विशेषता को देखने के लिए और इससे पैदा होने वाले आनंद और आत्मविश्वास को महसूस करने के लिए साक्षतरता की आवश्यकता है। 'विविधता में एकता' पर आधारित भारत में भी शिक्षा ना मिलने के कारण, मातृभाषा पढ़ना या लिखना ना जानने वाले भी हम में से कुछ लोगों को बहुत कष्टों का सामना करना पड़ता है। पढ़ना-लिखना हर मनुष्य के लिए ज़रूरी है। **शांति का भारतीय संदेश** यह है कि जो कुछ हुआ है वो अच्छे के लिए हुआ है और जो हो रहा है वो अच्छे के लिए और अच्छा ही होता रहेगा। कठोपनिषद के 'उत्तिष्ठतः जाग्रत प्राप्य वरान्निहोधत' में शुरू हाने वाली पंक्तियां स्वामी विवेकानंद का आदर्श वाक्य, एक सुझाव है।

नीनु एस डी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

केरल के सिनेगॉग

केरल में अधिकांश यहूदी समुदाय ने 1950 या उसके बाद के दशकों में प्रवास किया और परदेशी आराधनालय के अपवाद के साथ कोच्चि क्षेत्र में छोड़ी गई इमारतों ने प्रार्थना घरों और सांप्रदायिक केंद्रों के रूप में काम करना बंद कर दिया। केरल में रहने वाले यहूदी समुदाय के पास हमेशा छोटे आराधनालय स्थलों को ठीक से बनाए रखने व उनको नवीनीकृत करने में अपनी रुचि दिखाई। और समुदाय के बारे में विद्वानों के लेख व्यापक रूप से उपलब्ध है। आगंतुकों को धीरे-धीरे पता चला रहा है कि वे कोच्चि या एर्नाकुलम से एक घंटे से भी कम समय में निजी कार या टैक्सी, साथ ही नौका और बस द्वारा अधिक दूरस्थ सभा स्थलों तक पहूँच सकते है। वे साइटों के लिए अपना रास्ता बनाने और कोच्चि के बाहर ग्रामीण इलाकों का आनंद लेने के लिए समय निकालते हैं। इसके अलावा ऐतिहासिक संरक्षण के क्षेत्र में पेशेवर और पत्रकार, साथ ही क्षेत्र के आर्थिक विकास पर काम करने वाले सरकारी विशेषज्ञ अपने स्थानीय वातावरण में ऐतिहासिक आराधनालय भवनों के सांस्कृतिक मूल्य को पहचानने आए हैं। उन्होंने केरल के शेष कई सभा स्थलों को विनाश से बचाया है।

केरल के सिनेगॉग

चेन्दमंगलम सिनेगॉग

परदेसी सिनेगॉग, मट्टनचेरी

परवूर सिनेगॉग

माळा सिनेगॉग, तृशूर्

तेक्कुंभागम सिनेगॉग, मट्टान्चेरी था तेक्कुमभागम या तेक्कुमभागम

कडवुमभागम सिनेगॉग, मट्टान्चेरी

कतवुंभागम सिनेगॉग, एर्नाकुलम

परदेशी सिनेगॉग कोच्ची

कोच्चि में एक वहुत प्रसिद्ध परदेशी सिनेगॉग जिसे यहूदी सिनेगॉग और मट्टनचेरी सिनेगॉग के रूप में भी जाना जाता है। परदेसी विभिन्न भारतीय भाषाओं में इस्तेमाल किए जाने वाला एक शब्द है और इस शब्द का वास्तविक अर्थ विदेशी है जिसे आराधनालय में लागू किया गया था क्योंकि इसका इस्तेमाल पहले व्हाइट यहूदी द्वारा किया जाता था जो क्रैंगानोर मध्य-पूर्व के यदूदियों का एक संयोजन था और

मैं शपथ लेता हूँ कि मै स्वयं स्वच्छता के प्रति सजग और उसके लिए समय दूंगा, हर साल 100 घंटे यानी हर सप्ताह दो घंटे श्रम।

यूरोपीय निर्वासित, वह उस क्षेत्र के सात आराधनालयों में से एक है जो अब तक उपयोग में है। यह कोच्चि जाने वाले पर्यटकों के सूची में सर्वोच्च स्थानें में शामिल है। यह 1568 में मलबार येहुदान लोगों या कोचिन यहूदी समुदाय द्वारा एक भूमि पर बनाया गया था जिसे राजा वर्मा ने मलबारी यहूदिय समुदाय को उपहार में दिया था। बाद में वर्ष 1662 में यहूदी आराधनालय को पुर्तगालियों द्वारा बर्बाद कर दिया गया और डचों द्वारा दो साल बाद फिर से बनाया गया।

चेंदमंगलम में यहूदी आराधनालय

17" वीं शताब्दी के आसपास निर्मित चेंदमंगलम में यहूदी आराधनालय एक पारंपरिक शैली का आराधनालय है। उसके लिए भूमि कोच्चि के पारंपरिक मंत्रियों पालियम परिवार द्वारा प्रदान की गई थी जो इस अवधि के दौरान महिलाओं के लिए एक अलग प्रवेश द्वारा के साथ पारंपरिक शैली में चेंदमंगलमं गॉव के मालिक थे। आराधनालय जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। विभाग ने पारंपरिक सामग्रियों का उपयोग करके आराधनालय को वैज्ञानिक रूप से संरक्षित किया था। आराधनालय के शुरूआती सदस्यों में से एक के बारे में माना जाना है कि एक मकबरे को शिलालेख आराधनालय के समाने रखा गया है। इसी स्थल में कई अन्य मकबरे के शिलालेख किए गए है। आराधनालय में केरल में यहूदी आराधनालय पर एक प्रदर्शन की व्यवस्था की है।

माळा सिनेगॉग

माला सिनेगॉग केरल के तृशूर जिले में स्थित एक यहूदी पूजा स्थल है जिसे यूरोपीय यहूदियों और मूल निवासियों के बीच मिलन से पैदा हुए मलबारी (काले) यहूदियों द्वारा संरक्षित किया गया था। ऐसा माना जाता है कि इसका निर्माण 1400 ई में किया गया था और 1792 में इसका जीर्णोधार किया गया था क्योंकि 1780 के दशक में टीपू सुल्तान के हमले के दौरान गंभीर क्षति हुई थी। यद्यपि 1909 में प्रमुखतः नवीनीकरण किया गया था। 1955 में स्थानीय यहूदियों के इज़राइल से बाहर निकलने के साथ यह अनुपयोगी हो गया। इसके बाद इसका स्वामित्व बदल गया और बडे पैमाने पर अतिक्रमण के साथ संरचना को अधिक दुरुपयोग का सामन करना पड़ा।

यहूदी आराधनालय, परवूर

सोलहवीं शताब्दी के दौरान निर्मित उत्तरी परवूर में यहूदी आराधनालय यहूदी सडक पर स्थित है। सिनेगॉग के सामने दो मंजिला पडिप्पुरा है।

अर्जित कृष्ण पी
सुपुत्र सुरेष पी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

दीपावली

हरी घास पर बिखेर दी है,
किसने मोती की लड़ियॉ?
कौन रात में गूँथ गया है,
ये उज्ज्वल हीरों की कड़ियॉ
जुगनू से जगमग-जगमग ये,
कौन चमकते हैं ये चमचम?
नभ के नन्हें तारों से ये,
कौन दमकते हैं ये दमदम?
लुट गया है कौन जोहरी अपने घर का भरा खजाना,
पत्तों पर, फूलों पर, पग-पग बिखरे हुए रतन हैं नाना।
इतनी सुबह मना रहा है कौन खुशी में यह दीवाली,
वन उपवन में जला है किसने दीपावली निराली।
मन होता इन ओस के कणों
अंजुली में भर कर घर ले जाऊँ
इनकी शोभा निरख कर इन पर कविता एक बनाऊँ।

भद्रा आर
सुपुत्री सी राजेन्द्रन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भारतीय समाज

कहा जाता है कि भारतीय समाज सैकडों वर्षों में विकसित हुआ है। समाज में बहुत लोग हैं जो प्रगतिशील हो गए हैं। लेकिन ठेठ भारतीय समाज ऐसा नहीं होता। भले ही यह इक्कीसवीं सदी है फिर भी वहुत लोग हैं जो समय के साथ होने वाली परिवर्तनों को नहीं समझते हैं। कई सामाजिक मुद्दें अभी भी मौजूद हैं। वे पहले भी मौजूद थे। लेकिन उस समय समाज ने वही किया था। लेकिन समय के साथ-साथ बदलाव जरूरी है और वही बदलाव के साथ पुरुषों की सोच भी बदलना है।

समाज की मुख्य समस्याओं में एक यह है कि महिलाओं को अक्सर अवसरों से वंचित किया जाता है। चाहे ये रोजगार के लिए हो या शिक्षा के लिए। यह कुछ लोगों को तुच्छ लग सकता है, लेकिन उतना भी तुच्छ नहीं है जिसके लिए समाज को अपनी आँखें खोलनी चाहिए। कभी एक समाज था जहाँ महिलाओं ने कभी नौकरी या उच्च शिक्षा के लिए प्रयास नहीं किया। महिलाओं की शादी पहले ही कर दी जाती थी और परिवार को संभालने का बोझ बहुत कम उम्र में उनके सिर पर डाल दिया जाता था। लेकिन आजकल महिलाएँ अपनी पढाई जारी रखना चाहती है। शिक्षित और सशक्त महिलाओं की पहली प्राथमिकता शादी नहीं है। वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बाद ही शादी करना चाहती है।

विभिन्न समूहों के लोग विभिन्न रूप से असमानताओं का सामना करते है। लोगों के साथ अकसर जाति, रंग, धर्म और आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव किया जाता है। वे वंचित समूह है। कुछ जातियों और धर्मों को

समाज श्रेष्ठ मानता है। वंचित समूह के लोगों को अक्सर नौकरियों और शिक्षा के अवसरों के लिए उपेक्षित किया जाता है। गरीबी को अपराध माना जाता है।

समाज का एक और दुखद मुद्दा है-दहेज। इससे कई मौतें हो रही है। यह बूरी प्रथा उन लोगों के लिए वरदान जैसी होती है जो अपनी बेटियों के लिए दूल्हा खरीदने में सक्षम है।

मैं ऐसे एक समाज की कामना करती जो बिना किसी भेदभाव के लोगों को अवसर और अधिकार प्रदान करें। वास्तव में सशक्त होने के लिए महिलाओं को प्रशासन और सरकार के प्रत्येक स्तर पर अपने उचित अधिकार का दावा करना चाहिए। स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए आरक्षण उचित दिशा में उठाया गया एक कदम है।

यह भारत की आजादी की 75 वीं वर्षगांठ है। गणतंत्र बनने की 75वीं वर्षगांठ तक हमें वंचितों के लिए समानता हासिल करनी होगी। आइए हम समाज के बारे में रूढ़ियों को समाप्त करके और लोगों के मन में प्रगतिशील विचार लाकर समाज के लिए काम करें।

गणतंत्र दिवस 2022

ओडिट दिवस 2022

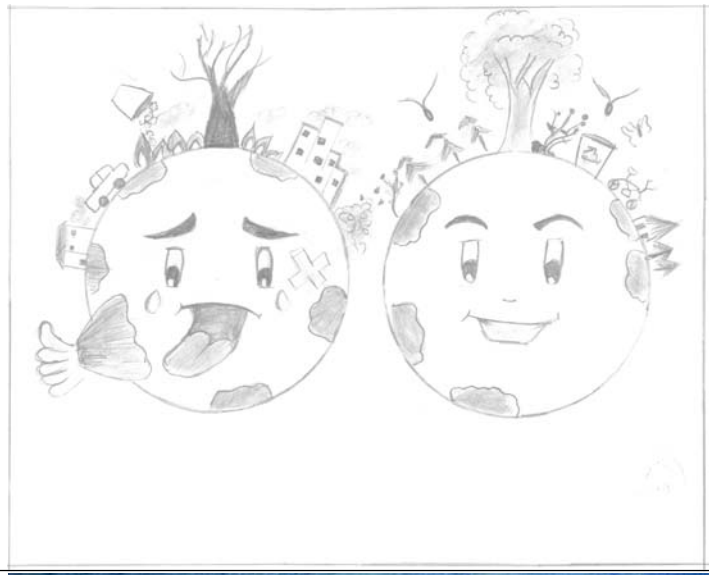

भद्रा आर,
सुपुत्री सी राजेन्द्रन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मीनाक्षी
सुपुत्री नीनु एस डी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

नैनानिका
सुपुत्री रंजित्त आर
लेखापरीक्षक

ओणम त्योहार 2022

തൃശ്ശൂർ
ഓണാഘോഷം

ഓണാഘോഷം
THRISSUR

എജീസ് ഓഫീസ് സ്റ്റാഫ് റിക്രിയേഷൻ ക്ലബ്ബ്
തൃശൂർ
ഓണാഘോഷം

पार्वती राहुल

सुपुत्री राहुल पा

उप महालेखाकार/ए एम जी I

देविका के दीपक

सुपुत्री दीपक के वी

सहायक पर्यवेक्षक

आदर्श डी
सुपुत्र दिनाराज एम.के.
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

तितली का संघर्ष

एक दिन, एक आदमी ने एक कोकून देखा, वह तितलियों से प्यार करता था, वह आदमी रोज तितलियों के आसपास बहुत समय बिताता था।

वह जानता था, कैसे एक तितली एक बदसुरत कैटरपिलर से एक सुंदर चीज़ में बदलने के लिए कितना संघर्ष करती है।

तितली दुनिया को देखने के लिए अपना रास्ता बनाने की कोशिश कर रही थी, उसने यह देखने का फैसला किया कि कोकुन से तितली कैसे निकलेगी।

वह कई घंटों तक खोल को तोड़ने के लिए तितली को संघर्ष करते हुए देख रहा था, बाहर आने के लिए तितली घंटों से बहुत संघर्ष कर रही थी।

दुर्भाग्य से, कई घंटों तक लगातार कोशिशों के बाद भी कोई प्रगति नहीं हुई। ऐसा लगता था कि तितली ने परी कोशिश की थी और अधिक कोशिश नहीं कर सकती थी।

उस व्यक्ति ने तितली की मदद करने का फैसला किया, उसके पास एक कैंची थी वह कैंची से कोकूल को हटा दिया, तितली को देखता रहा।

दुर्भाग्य से, तितली अब सुंदर नहीं दिखती थी, वह आदमी खुश था उसने बिना किसी संघर्ष के तितली को कोकून से बाहर निकाला, वह तितली को देखता रहा।

उसने सोचा कि किसी भी समय, तितली अपनी पंखों का विस्तार कर सकती है, दुर्भाग्य से, ना तो पंखों का विस्तार हुआ और नहीं उसका सुंदर शरीर प्रकट हुआ।

वह कभी उड़ने में सक्षम नहीं था, वह नहीं जानता था कि केवल संघर्षों से गुजरने से मजबूत पंखों को साथ तितली सुंदर बन सकती है।

तितली के अपने कोकून से बाहर आने के निरंतर प्रयास से शरीर में जमा द्रव पंखों में परिर्वित हो जाता है। और पंख सुंदर और बड़े हो जाएंगे।

नैतिक शिक्षा : परिश्रम और संघर्ष के बिना हम उतने मजबूत नहीं बन सकते जितनी हमारी क्षमता है।

गोडसण पोल एन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जल जीवन मिशन

जल एक प्राकृतिक संसाधन है, जो अपूर्णीय है। हमारे ग्रह 'पृथ्वी' पर जल का वितरण असमान है। इस दुर्लभ संसाधन के असमान वितरण का एक बढती हुई जनसंख्या पर पडने वाले प्रभाव का एक उपयुक्त उदाहरण करता है। भारत विश्व की कुल आबादी में लगभग 18% की हिस्सेदारी रखता है। लेकिन इस आबादी के लिए जल की बुनियादी आवश्यकता की पूर्ति के लिये भारत के पास विश्व के आधे जल संसाधनों का केवल 4% की मौजूद है, जो जल वितरण और पहुँच की चुनौती को दर्शिता है।

जल जीवन मिशन योजना की शुरुआत 15 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी जी ने की थी, इस मिशन को सफल बनाने के लिए केंद्र सरकार ने 3 लाख 60 हज़ार करोड रूपये लागत से 2024 तक हर घर तक शुद्ध जल पहुँचाने का लक्ष्य रखा है, इसके माध्यम से हर घर तक साफ पानी पहुँचाने की कोशिश की जा रही है, मगर वह असफल हो जाता है कि भारत बच्चों की होने वाली मौतों पर नियंत्रण कर सकेगा। जल जीवन मिशन का लक्ष्य 2024 तक ग्रामीण इलाकों में सभी घरों को पर्याप्त और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना है। 2019 में जब इस मिशन की शुरुआत की गई थी तब देश की लगभग आंधी ग्रामीण आबादी स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता से वंचित थी।

भारत सरकार ने अपने जल जीवन मिशन (ग्रामीण एवं शहरी) के माध्यम से 'जल के अधिकार' को मान्यता प्रदान की है और पूरी तरह कार्यात्मक टैप वाटर कनेशन का एक समान वितरण प्रदान करने का लक्ष्य रखती है।

लेकिन जल निकायों का कुप्रबंधन, संदूषण और भूजल का अत्यधिक दोहन जल प्रबंधन से संबंधित प्रमुख चुनौतियों के साथ-साथ 'जल के अधिकार' के दुरुपयोग को उजागर करता है और स्थायी जल प्रबंधन की ओर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता पर बल देता है।

भारत में जल संसाधनों से सबंधित प्रमुख चुनौतियाँ

तीव्र शहरीकरण से प्रेरित अनियंत्रित भूजल निकासी के कारण इस मूल्यवान संसाधन में गिरावट आई है। उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश भागों में अब भूजल

ज़मीनी स्तर से 100 मीटर नीचे तक चला गया है। वर्तमान निकासी दर के जारी रहने पर भविष्य में भूजल स्तर 200-300 मीटर नीचे जा सकता है। जलकूपों (aquifers) से जल के कम होते जाने के साथ वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि भूमि अचानक या धीरे-धीरे नीचे धँस सकती है जिसे भूमि अवतलन (land subsidence) के रूप में जाना जाता है।

घरेलू औद्योगिक और खनन, अपशिष्ट की एक बडी मात्रा को आम निकासों में बहाया जाता है, जिससे जलजनित रोगों कुपोषण/यूट्रोफिकेशन का खतरा उत्पन्न हो सकता है। ये फूड वेब और विशेष रूप से जलीय पारिस्थितिक तंत्र को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

तापमान में उतार-चढ़ाव के कारण वर्षा के पैटर्न में बदलाव आ रहा है, समुद्र स्तर की वृद्धि हो रही है और तापमान में वृद्धि के साथ वाष्पीकरण की प्रक्रिया तेज हो रही है जिससे बादल अधिक भारी हो रहे हैं।

वार्षिपत पवनें बादलों के अधिक भार के कारण उन्हें उड़ाने से असमर्थ हो जाती हैं, जिससे महासागरों के ऊपर ही अधिक वर्षा देखी जाती है और वर्ण-निर्भर क्षेत्रों में सूखे की स्थिति बनती है। कई स्थानों पर अत्यधिक वर्षा/बादल फटने (cloudbursts) की घटनाओं से बाढ़ या फ्लैश फ्लड की भी उत्पत्ति होती है। भारत में जल संसाधनों की कम आपूर्ति के साथ ही अक्षम अपशिष्ट जल प्रबंधन जल का इष्टतम आर्थिक उपयोग कर सकने की देश की क्षमता को पंगु बना रहा है।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा मार्च 2021 में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत की वर्तमान जल उपचार क्षमता 27.3% और सीवेज उपचार क्षमता 18.6% है।

अधिकांश सीवेज उपचार संयंत्र अधिकतम क्षमता पर कार्य नहीं कर रहे हैं और वे निर्धारित मानकों के अनुरूप भी नहीं है।

आगे की राह

भारत में एक समर्पित जल उपयोग ऑडिट तंत्र की आवश्यकता है जो जागरूकता की कमी, अति प्रयोग और जल निकायों के प्रदूषण के कारण स्थानीय स्तर पर जल वितरण प्रणालियों में जल की क्षति की पहचान करे और इसका उन्मूलन करे।

जल जीवन मिशन की भूमिका को दोहरे दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिये, जहाँ जल संसाधनों के आपूर्ति प्रबंधन और संवहनीयता/स्थिरता दोनों पर बल दिया जाना चाहिए, क्योंकि जल जीवन शब्द स्वयं में जल के जीवन का भी प्रतीक है। मानव के स्वस्थ जीवन की कल्पना तभी की जा सकती है जब वह जल का स्वस्थ जीवन के साथ सामंजस्य स्थापित करे। इस प्रकार शहरी स्तर पर प्रभावी वाटरशेड प्रबंधन योजनाओं को लागू करने की आवश्यकता है और सभी घर में पर्ण जल संचयन को अनिवार्य किया जाना चाहिए। चूंकिजल की कमी महिलाओं के लिये असमान रूप से अहितकारी है, नल के जल की उपलब्धता और अभिगम्यता सुनिश्चित करने से ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं को अपने बच्चों को समय देने और विकास प्रक्रिया में भाग लेने में मदद मिल सकती है। इसके अलावा, महाराष्ट्र में प्रचलित यह मिशन महिलाओं की व्यथा को कम करने में मदद कर सकता है। ग्राम

जल एवं स्वच्छता समिति में 50 प्रतिशत महिलाओं की भगीदारी सुनिश्चित करना इस दिशा में एक स्वागत योग्य कदम है। जल पुनर्भरण हेतु समय देने के लिये सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में भूजल संसाधनों के पुनर्भरण या आगे निकासी पर प्रतिबंध लगाने की आवश्यकता है। ऐसे शहर में जल संरक्षण क्षेत्र स्थापित कर प्राप्त किया जा सकता है जहाँ शून्य-दोहन की स्थिति निर्मित की जाए। नागरिकों को जल के कुशल उपयोग के बारे में सूचित करने के लिये जागरूकता अभियान भी चलाया जाना चाहिये, जिसके लिये 'नीर' नामक एक शुभंकर का उपयोग किया जा सकता है।

'जल का अधिकार'

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने स्पष्ट रूप से जल और स्वच्छता के मानव अधिकार को मान्यता दी है और स्वीकार किया कि मानवाधिकारों की पुष्टि के लिये स्वच्छ पेयजल और स्वच्छता आवश्यक है। भारत में जल के अधिकार को संविधान में मूल अधिकार के रूप में प्रतिष्ठापित नहीं किया गया है। हालाँकि संघ के साथ-साथ राज्य स्तरों के न्यायालयों ने सुरक्षित एवं आधारभूत जल के साथ ही स्वच्छता के अधिकार की व्याख्या की है जो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 (जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार) में निहित है। सतत् विकास लक्ष्य 6 (सभी के लिए स्वच्छ पानी और स्वच्छता) जो 2015 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा स्थापित 17 सतत विकास लक्ष्यों में से एक है, सभी के लिए जल और स्वच्छता की उपलब्धता एवं संवहनीय प्रबंध सुनिश्रित करने का आह्वान करता है, जो बैश्विक राजनीतिक एजेंडे में दल और स्वच्छता के महत्व की पुष्टि करता है।

मुहम्मद यशल एम
सुपुत्र हसीना पी पी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बुद्धिमान हक्कू

शहर के पूर्व में एक तालाब था। उसके किनारे आँम का वृक्ष था। उस पर बहुत सारे कच्चे-पक्के आम थे। उन आमों को तोड़ने के लिए बच्चे पत्थर मारते थे। उसी तालाब में एक मेंढक रहता था। उसका नाम हक्कू था एक दिन जब बच्चे आमों पर पत्थर मार रहे थे, तो वह डर कर बाहर आया और किनारे पर बैठ गया।

उसी समय रक्कू कौवा उड़ता हुआ वहां पहुंचा। हक्कू को देख उसने उसे अपनी चोंच में पकड़ लिया। रक्कू कौवा, हक्कू मेंढक को ले वृक्ष की डाल पर जा बैठा। वह उसे खाने की तैयारी करने लगा। हक्कू बुद्धिमान था। उसने कौवे से कहा, भैया मैं मिट्ठी से गंदा हो गया हूँ पहले मुझे धो लो फिर स्वाद से खाना।

हक्कू की बात सुन रक्कू बहुत प्रसन्न हुआ। वह हक्कू को चोंच में दबाए तालाब के किनारे पहुंचा। धोने के लिए उसको नीचे रखा और पानी लेने के लिए तालाब की ओर मुड़ा। तभी मौका पाकर हक्कू ने पानी में छलांग लगाई और गहरे पानी में चला गया। रक्कू को आवाज़ लगाई कहाँ हो? अरे भाई!! हक्कू बोला-"कौवे भैया!!" तुम भी अपने घर जाओ। "रक्कू कौवा मुंह लटाकर उड़ गया।

श्रीलक्ष्मी सुधीर
सुपुत्री सुधीर आर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

बुद्धिमान बूढा

एक बार एक आदमी रहता था जिसके 7 घोड़े और 3 बेटे थे। एक दिन इस व्यक्ति ने वसीयत की कि उसके मरने के बाद उसके बड़े बेटे को आधे घाड़े मिलेगे दूसरे बेटे को आधे और तीसरे बेटे को आधे धोड़े मिलेगा। लेकिन शर्त यह थी कि वह घोड़े को न तो नुकसान पहुंचाए और न ही उन्हे मारे। उनकी मृत्यु के बाद उनके बेटे सोच रहे थे कि सात घोड़े को कैसे विभाजित किया जाए, यदि हमें विभाजित करने की आवश्यकता है. तो हमे उन्हे आधा कर देना चाहिए। इससे वे और सोचने लग गए यह देखकर उनके पिता के मित्र ने उनसे पूछा "क्या हुआ?" उन्होने बताया कि वे किस स्थिति में थे। फिर वह आदमी अपने घोड़े मे से एक लाया और उनको मिलने के लिए कहा, उसने देखा, यह 8 घोड़े थे, फिर बडे बेटे के लिए आधा घोड़ा, इसलिए 4 घोड़े बडे बेटे की दिए। दूसरे बेटे के लिए आधा। 2 घोड़े दिए गए हैं। तीसरे बेटे के लिए शेष घोड़ा जो कि 1 घोड़ा है इसलिए तीनों पुत्रों का उसका हिस्सा मिल गया और वह आदमी खुशी-खुशी अपने घोड़े के साथ चला गया।

कुमारी अंजना
सुपुत्री जोजू एफ्रेम
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

केरल - भगवान का अपना देशे

केरल भारत के मालाबार तट पर स्थित एक राज्य है। यह भारत के सबसे लोक प्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है। 2012 में, नेशनल ज्योग्राफिक की ट्रैवलर पत्रिका ने कहा है कि दुनिया को केरल के "दुनिया के दस स्वर्ग" और "50 जीवन से भरे स्थलों को अवश्य देखना चाहिए" में से एक के रूप में नामित किया। नेशनल ज्योग्राफिक ट्रेवलर ने केरल को '2019 में घूमने के लिए 19 सर्वश्रेष्ठ स्थानों में सूचीबद्ध किया। कई विज्ञापन केरल को टैगलाईन केरल, 'गॉड्स ऑन कंट्री' या 'भगवान का अपना देश' के साथ प्रचारित करते हैं। इस मुहावरे का अर्थ एक ऐसा क्षेत्र, जो ईश्वर का अपना देश, है। इसका उपयोग सबसे पहले आयरलैंड के विशाल पहाड़ का वर्णन करने के लिए किया गया था। बाद में न्यूजीलैंड, केरल, कॉर्नवाल, स्कोटलैंड वेल्स, उत्तरी आयरलैंड़, ऑस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमेरिका सहित कई स्थानों के लिए उपयोग किया जाता है।

केरल के संबंध में यह मुहावरा श्रीवाल्टर मेंडेज ने 1989 में राज्य के पर्यटन क्षेत्र को पुनर्जीवित करने के लिए इस टॅगलाईन का पहली बार उपयोग किया था। उन्होंने दुनिया भर केरल की प्रकृतिक सुंदरता को बढ़ाने के लिए रेल पर्यटन विभाग के अनुरोध के अनुसार विभिन्न विचारों पर काम किया था। वह एक विज्ञापन एजेंसी के लिए क्रिएटिव थे,

और उनके दिए हुए टैगलास 'गॉड्स ओन कंट्री' ने केरल के पर्यटन क्षेत्र में चमत्कार किया। यह टैगलाईन न सिर्फ़ आश्चर्यजनक प्राकृतिक सदरता का आह्वान करती है, जिसके लिए केरल निश्चित रूप से प्रसिद्ध है, बल्की विविध मान्यता वाले लोगों के आपसी मोहोब्बत से रहने को भी बतलाती है।

समुद्र तट से लेकर पश्चिमी घाट, चावल के खेतों से लेकर पहाड़ी वन करों की भूलभूलैया तक, केरल के

परिदृश्य विविधता अपने लोकों के रूप में विविध है। केरल नाम नारियल के लिए स्थानीय मलयालम शब्द केरा से लिया गया है, और राज्य भर में नारियल के पेड़ों की बहुतायत है। नारियल न केवल इस जगह को अपना नाम देता है, बल्कि एक सर्वव्यापी और अनुकूलनीय प्राकृतिक संसाधन के रूप में भी कार्य करता है। केरल दुनिया के उन कुछ स्थानों में से है जहां आप 400 किलोमीटर की दूरी के भीतर समुद्रतटों, बैकवाटर, हिलस्टेशन, हाउसबोट, इतिहास, मनोरंजन पार्क और समृद्ध संस्कृति और विरासत का आनंद ले सकते हैं। इस के द्वारा प्रदान किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के अनुभव इसे दुनिया के सभी पर्यटन स्थलों में उत्कृष्ठ बनाते हैं।

केरल की एक अनूठी संस्कृति है। स्थानीय भाषा मलयालम है, लेकिन आमतौर पर अंग्रेज़ी और हिंदी भी समझी जाती है। कलारूप कलारीपयट्टू से लेकर कथकली तक हैं जो सबसे पुरानी नृत्य शैलियों से एक है। ओणम सबसे महत्वपूर्ण त्योहार है;

यह पौराणिक राजा महाबली की केरल वापसी का जश्न मनाता है। इस समय, पानी के कार्निवाल का एक विस्फोट होता है जो हर जगह से आगंतुकों को आकर्षित करता है,

इसमें से सबसे रोमांचक नेहरू ट्रॉफी बोट रेस अगस्त के दूसरे शनिवार को आयोजित की जाती है।

हाथियों की चिघाड़, मंदिर में रात में गरजने वाले नृत्य, रंग-बिरंगे त्योहार, शांत चर्च और सुरुचिपूर्ण सर्प नौका दौड़ केरल को आश्चर्यजनक सुंदरता की भूमि बनाते हैं और भगवान का उपदेश भी बनाते है।

अनिलकुमार ई के
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

योग

प्रस्तावना

भारत में सभी व्यक्ति सुख एवं शांति चाहते हैं। तथा विश्व में जो कुछ भी व्यक्ति कर रहा हैं उसका एक ही मुख्य लक्ष्य है कि इससे उसे सुख मिलेगा। व्यक्ति ही नही कोई भी राष्ट्र अथवा विश्व के संपूर्ण राष्ट्र मिलकर भी इस बात पर सहमत है कि विश्व मे शांति स्थापित होनी चाहिए। प्रति वर्ष इसी उद्देश्य से ही एक व्यक्ति को शांति स्थापित करने के लिए नोबेल पुरस्कार दिया जाता है। परंतु यह शांति कैसे स्थापित हो? इस बात को लेकर भी असमंजस की स्थिति में है। सभी लोग अपने अपने विवेक अनुसार इसके लिए चिंतन करते है। लेकिन कोई भी माँग नही कर पाता है। कोई कहता है धरती पर केवल एक धर्म हो तो शांति हो। किंतु ऐसा नहीं है सबकी अपनी अपनी सीमाएं है। एक ऐसा रास्ता जिस पर सभी निर्भर होकर पूर्ण स्वतंत्रता के साथ चल सके और जीवन में निर्भय होकर पूर्ण सुख, शांति एवं आनंद को प्राप्त कर सकता है, वह है महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टोग योग।

योग का अर्थ

योग का शब्दिक अर्थ होता है जोडना। योग शब्द संस्कृत की 'युज' धातु से मिलकर बना है जिसका अर्थ है-जोड़ना। व्यक्ति स्वयं को उस परम शक्ति से जोडना जिससे यह संचार चल रहा है। यह भारतीय संस्कृति की अनुपम देन है। योग मनुष्य मे स्थिरता धीरता और अनुशासन का जन्म देता है और अनुशासन से व्यक्तित्व का विकास होता है। व्यक्तित्व से चरित्र का विकास होता है और चरित्र से एक समाज का निर्माण होता हैं।

योग एक ऐसे विधा है जिससे हमारे दुखों की निवृत्ति होती है। दुखों की निवृत्ति के साथ-साथ हमें ऐसे आनंद की अनुभूति होती है, जो बुद्धि तथा इन्द्रियों की परिधि से सर्वथा परे है। इस आनंद के फलस्वरूप ही मनुष्य के सभी दुखों कि निवृत्ति होती है। योग के अंत ओमी को अष्टांग कहते हैं जिससे आठो आयामों का अभ्यास एक साथ किया जाता है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, धारण, ध्यान, प्रात्याहर, समाधि को योग के आठ अंग माना जाता है। योग में प्राणयाम का विशेष

महत्व हैं। प्राण का अर्थ जीवन, शक्ति एवं आयाम का अर्थ ऊर्जा पर नियंत्रण होता है। योगाभ्यास से व्यक्ति की अनेक क्षमताओं का विकास होता है शरीर बलवान बनता है साथ ही चिंता तनाव से मुक्ति भी मिलती हैं। इसलिए हमारे जीवन में योग का अत्यधिक महत्व है। भारतीय धर्म और दर्शन में योग का अत्यधिक महत्व है। आध्यात्मिक उन्नति या शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग की आवश्यकता एवं महत्व को प्रायः सभी दर्शनों में माना गया है।

2014 में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र को 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का सुझाव दिया था। क्योंकि गर्मियों में सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित होता है एवं उतरी गोलार्द्ध में 21 जून वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है।

उपसंहार

देखा जाए तो योग का काई धर्म नहीं हैं, यह जीने की एक कला है। जिसका लक्ष्य है स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन। योग के अभ्यास से व्यक्ति को मन, शरीर ओर आत्मा को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। यह भौतिक और मानसिक संतुलन द्वारा शांत मन और संतुलित शरीर की प्राप्ति कराता है। तनाव और चिंता को व्यवस्थित करता है। यह शरीर में लचीलापन मांसपेशियों को मजबूत करने और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ाने में मदद करता हैं। योग करने से शरीर बलवान तो बनता ही है साथ ही साथ पैसों की बचत होती है क्योंकि नियमित योग करने से हमें कोई बीमारी नहीं होती और किसी प्रकार की दवाई की आवश्यकता नहीं होती और भविष्य में कोई बीमारी भी नहीं होगी। मनुष्य और प्रकृति के बीचसमंजस्य, विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला है तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करने वाला है। हमारी बदलती जीवन शैली में यह चेतना बनकर हमें होने वाले परिवर्तनों से निपटने से मदद कर सकता हैं।

अनुप्रिया अनिल
सुपुत्री अनिलकुमार ई.के.
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पिता मेरी हिम्मत !

पिता एक उम्मीद है, एक आस है,
परिवार की हिम्मत और विश्वास है,
बाहर से सख्त अंदर से नर्म है,
उसके दिल में दफन कई मर्म है।

पिता संघर्ष की आंधियो में हौसलो की दीवार है
परेशानियों से लडने को दो धारी तलवार है
बचपन में खुश करने वाला खिलौना है,
नींद लगें तो पेट पर सुलाने वाला बिछौना है।
पिता ज़िम्मेवारियों से लदी गाड़ी का सारथी है।
सबको बराबर का हक दिलाता यही एक महारथी है,
सपनो को पूरा करने वाली जान है
इसी से तो मां बच्चों की पहचान हैं।

पिता ज़मीर है पिता जागीर है
जिसके पास ये है वह सबसे अमीर है.
कहने को सब ऊपर वाला देता है
पर खुदा का ही एक रूप पिता का शरीर है।

मन

मणिकण्ठन वि के
सहायक पर्यवेक्षक

मन ही आपको बनाता है कि आप कौन है.....*

* विचार मन को दिशा देते हैं.....
* यदि आपके विचार विकृत हैं, तो मन आपके सभी कार्यों को बुराई की ओर ले जाएगा....
* तब आपके सभी कर्म और विचार बुराई की दिशा में रहते हैं.....
* आपका दिमाग आपको इसका सामना करने की अनुमति नहीं देगा, भले ही आप के बच्चों को अच्छाई का पाठ पढाया जाए क्योंकि आप इस तरह की बुराई के माध्यम से तेजी से आगे बढ़ते हैं....*
* फिर बुराई से मुक्ति कैसे मिले....*
* संदेह उत्पन्न हो सकता है कि बहुत से लोग बुराई को ठुकराकर अच्छाई या ईश्वर की पराकाष्ठा तक पहुंच रहे हैं...*
* बुराई से अच्छाई में बदल जाएगा .. क्योंकि जब वह बुराई में चलेगा तो सच्चाई को ठुकरा देगा और बहुत से पाप कर्म करेगा...*
* कर्म का फल भोगना ही काफी नहीं है... ताकि एक-एक करके दुखों को पकड़ लिया जाए....
* जीवन तर्क के समान होगा.. जब कोई बिना मदद् के सभी विपत्तियों का अनुभव करता है, तो वह बिना जाने अपने किए हुए पापों को याद करेगा, उसके लिए प्रायश्चित महसूस करेगा और मदद् के लिए भगवान को याद करेगा....*
* कि हमेशा एक सच्चाई है कि भगवान मदद् करने और भगवान के चरणों में शरण लेने के लिए है...*
* वह अपने किए हुए पापों को गिनेगा और रोएगा... उसके विचार ईश्वर की ओर मुड़ेंगे और सत्य को जानने का प्रयास करेंगे.... *
* तदनुसार जो मन हमें अच्छे कर्मों की ओर ले जाता है, वही अच्छे कर्म बन जाते हैं...*
* भगवान की कृपा हमारे सामने सुख-शांति के द्वार खुलेंगे....*
* पवित्र मन दिव्य आत्मा से भर जाएगा.. हम पवित्र जीवन जिएगे...*
* सत्य यह हे कि ईश्वर आपके साथ है तो जीवन दुखों और दुखों से भरा है...*
* ईश्वर पर विश्वास करो और उन सिद्धांतों के अनुसार अपना जीवन जिए.. भगवान सबका भला करे.....*

हरे कृष्णा

हसीना पी पी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

डूबते को सहारा

यह कहानी मुजफ्फरपूर जिले की है। यही पर गंडक नदी बहती है जो हिमालय से निकलकर आती है।

एक बार की बात है बरसात का मौसम था। बहुत दिनों से लगातार बारिश हो रही थी। वर्षा अधिक होने के कारण नदी में बाढ आ गई। आसपास के सभी गाँव पानी में डूब गए। पानी घरों में घुस आया। सामान पानी में बहने लगा। पेड़-पौधे भी टूट गए। एक छोटा बच्चा अपनी छोटी-सी खाट पर सो रहा था। घर में पानी घूस जाने के कारण उसकी खाट पानी में तैरने लगी। तभी एक तेज बहाव आया और उसकी खाट पानी में तैरते हुए बह गई।

बच्चे की आँखें खुल गई। उसने आसपास देखा और डर के मारे जोर-जोर से चिल्लाने लगा। "बचाओ-बचाओ! मुझे बचाओ।" आसपास के लोगें ने बहते हुए बच्चे को देखा। उन्होंने भी शोर मचाना शुरू कर दिया. "बचाओ, अरे कोई बच्चा बह रहा है!"

रोना सुनकर बच्चे की में भी दौड़ती हुई आई। बच्चे को बहता हुआ देखकर वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। वह बोली "हाय! मेरे बच्चे को कोई तो बचा लो। वह डूबता जा रहा है।" सभी लोग वहाँ खड़े शोर मचाने लगे लेकिन उसे बचाने के लिए उनमें से कोई भी पानी में नहीं कूदा।

तभी एक नौजवान वहाँ आया। बच्चे को पानी में बहता देखकर वह पानी में कूद गया। तैरते हुए वह बच्चे के पास पहुँचा। उसे गोद में उठाया और किनारे तक ले गया।

माँ ने दोड़कर बच्चे को नौजवान की गोद से ले आया। बच्चे का मुँह चूमते हुए नौजवान को बहुत-बहुत धन्यवाद देने लगी।

नौजवान ने गॉव वालों की ओर देखते हुए कहा, "इतना शोर मचाने से तो अच्छा था कि आप बच्चे को बचाने का कोई उपाय सोचते। सच तो यह है कि हमें बोलना कम और काम अधिक करना चाहिए।

अश्वनि अनिलकुमार
सुपुत्री अनिलकुमार ई.के.
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

महिला सशक्तिकरण

'महिला' सशक्तिकरण के बारे में जानने से पहले हमें ये समझ लेना चाहिए कि हम 'सशक्तिकरण' से क्या समझते है। सशक्तिकरण से तात्पर्य किसी व्यक्ती की उस योग्यता से है जिसमें वह अपने जीवन से जुडे सभी निर्णय स्वयं ले सकें। 'महिला सशक्तिकरण के इस लेख में भी हम उसी क्षमता की बात कर रहे हैं, जहां महिलाएँ परिवार और समाज के सभी बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्मता हो। आशा करते है कि यह लेख आपके समाज में महिलाओं की स्थिति और अधिकारों से अवगत करवाने में सक्षम होगा और महिला सशक्तिकरण के विषय में आपकी जानकारी को और अधिक विस्तृत करेगा।

प्रस्तावना

आज के आधुनिक समय में महिला सशक्तिकरण एक विशेष चर्चा का विषय है। हमारे आदि ग्रथों में नारी के महत्व को मानते हुए यहाँ तक बताया गया है कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते है। लेकिन विडम्बना तो देखिए नारी में इतनी शक्ति होने के बावजूत भी उसके सशक्तिकरण की अत्यत आवश्यकता महसूस हो रही हैं। महिलाओं के अधिक सशक्तिकरण का अर्थ आर्थिक से है इन सुविधाओं को पाकर राष्ट्र के विकास में महिलाओं का महत्व और अधिकार के बारे में समाज में जागरूकता लाने के लिए मातृ दिवस अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस आदि जैसे कई सारे कार्यक्रम सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं। महिलाओं को कई क्षेत्रों में विकास की जरूरत है। भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाली उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरूरी है। जैसे दहेज प्रथा अशिक्षा यौन हिंसा असमानता, भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, वेश्यावृत्ति, मानव तस्करी और ऐसे ही दूसरे विषय। अपने देश में उच्च स्तर की लैंगिक असमानता हैं। जहाँ महिलाएं अपने परिवार के साथ ही बाहरी समाज के भी बुरे बर्ताव से पीड़ित हैं। भारत में अनपढ़ों की संख्या में महिलाओं का स्तर अव्वल हैं। नारी सशक्तिकरण का असली अर्थ तब समझ में आएगा जन भारत से उन्हें अच्छी शिक्षा दी जाएगी और उन्हें सब को काबिल बनाया जाएगा कि वे हर क्षेत्र में स्वतत्र होकर कैसले कर सकें।

भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता

1) आधुनिक युग में कई भारतीय महिलाएँ कई सारे महत्वपूर्ण राजनैतिक तथा प्रशासनिक पदों पर पदस्थ है, फिर भी सामान्य ग्रामीण महिलाए आज भी अपने घरों में रहने के

लिए बाध्य है और उन्हें सामान्य स्वास्थ्य सुविधा और शिक्षा जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं है।

2) शिक्षा के मामले में भी भारत में महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा काफी पीछे हैं। भारत में पुरुषों की शिक्षा दर 813 प्रतिशत है जबकि महिलाओं की शिक्षा दर मात्र 606 प्रतिशत ही है।

3) भारत के शहरी क्षेत्रों की महिलाएँ ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के अपेक्षा अधिक रोजगारशील हैं, आँकड़ों के अनुसार भारत के शहरों में साँफ्टवेयर इंडस्ट्री में लग्भग 30 प्रतिशत महिलाएँ कार्य करती है, वही ग्रामीण क्षेत्र तो लग्भग 90 फीसदी महिलाएँ मुख्यत कृषि और इससे जुडे क्षेत्रों में दैनिक मज़दूरी करती हैं।

भारत के महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार की भूमिका

1) बेटी बचाओं बेटी पढाओ योजना कन्या भ्रूण हत्या और कन्या शिक्षा को ध्यान में रखकर बनाई गयी हैं। इसके अंतर्गत लडकियों की बेहतरी के लिए योजना बनाकर और उन्हें सहायता देकर उनके परिवार में फैली भ्रांति कि लड़की एक बोझ है। इस सोच को बदलने का प्रयास किया जा रहा है।

2) महिला हेल्पलाइन योजना - इस योजना के अंतर्गत महिलाओं को 24 घंटे इमरजेंसी सहायता सेवा प्रदान की जाती है, महिलाएँ अपने विरुद्ध होने वाली किसी भी तरह की हिंसा या अपराध की शिकायत इस योजना के तहत निर्धारित नंबर पर कर सकती हैं। इस योजना के तरह पूरे देश भर में 121 नंबर डायल करके महिलाएँ अपनी शिकायतें दर्ज करा सकती है।

3) उज्ज्वला योजना - यह योजना महिलाओं को तस्करी और यौन शोषण से बचाने के लिए शुरू की गई है। इसके साथ ही इसके अंतर्गत उनके पुनर्वास और कल्याण के लिए भी कार्य किया जाता हैं।

4) महिला शक्ति केंद्र - यह योजना समुदायिक भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने पर केंद्रीत है। इसके अंतर्गत छात्रों और मेशेवर व्यक्तियों जैसे सामुदायिक स्वयंसेवक ग्रामीण महिलाओं को उनके अधिकारों और कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करते है।

उपसंहार

जिस तरह से भारत आज दुनिया में सबसे तेज आर्थिक तरक्की प्राप्त करने वाले देशों में गिना जाता है, इसे देखते हुए निकट भविष्य में भारत को महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। भारतीय समाज में सच में महिला सशक्तिकरण है। यह बहुत आवश्यक है कि हम महिलाओं के विरुद्ध अपनी पुरानी सोच को बदले और संवैधानिक तथा कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लाए। महिला सशक्तिकरण महिलाओं को वह मज़बूती प्रदान करता है, जो उन्हें उनके हक के लिए लड़ने में मदद करता हैं। हम सभी को महिलाओं का सम्मान करना चाहिए उन्हें आगे बढने का मौका देना चाहिए। "किसी ने बहुत अच्छी बात कही है" नारी जब अपने ऊपर थोपी हुए बेड़ियों एव कड़ियों को तोड़ने लगेगी तो विश्व की कोई शक्ति उसे नहीं रोक पाएगी। लोगों की सोच बदल रही है, फिर भी इस दिशा में और भी प्रयास करने की आवश्यकता हैं।

मूवी रिव्यू : ऊंचाई

शरण्या
सुपुत्री श्रीदेवी वि.वि.
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कहते हैं दोस्ती का रिश्तों सब रिश्तों से ऊंचा होता है और इस रिश्ते की खूबसूरती को फिल्मकार सूरज बड़जात्य ने चार दोस्तों की अनकंडीशनल दोस्ती के जरिए जो ऊंचाई प्रदान की है, वो अपने आप में दिल को छू जाती है। फिल्म की शुरुआत में महानायक अमिताभ बच्चन का एक डायलॉग है, 'सुना है कि इस एवेरस्ट में हर सवाल का जवाब मिलता है, देखना ये है कि यहां हमें अपने कितने सवालों के जवाब मिलते हैं?' दुनिया से अलविदा ले चुके अपने दोस्त की एवेरेस्ट बेस तक जाने की अंतिम इच्छा को पूरा करने निकली दोस्तों की जिंदगियों में भी कई सवाल हैं और इस सफर में उन्हें उन सभी सवालों के जवाब मिलते हैं। जीवन और रिश्तों के प्रति एक नया नजरिया मिलता है और उसके जरिए दर्शक फिल्म के आखिर में एक नई उम्मीद और नया ख्याल लेकर घर जाता है।

ऊंचाई की कहानी

कहानी एक मजेदार रोड ट्रिप के रूप में शुरू होती है, जहां जाने-माने बेस्ट सेलर लेखक अमित श्रीवास्तव अपने दो अन्य लंगोटिया (बोमन ईरानी) और ओम (अनुपम खेर) के साथ अपने दिवंगत दोस्त भूपेन (डैनी डेंग्जोंग्पा) को श्रद्धाजली देने और उसकी अंतिम इच्छा को पूरी करने के लिए एवरेस्ट के बेस कैंप की ऊंचाई तक पहूंचने के लिए निकल पड़े हैं। इसके बाद कहानी फ्लैश बैक में जाती है। भूपेन की सालगिरह है और वो हमेशा से चाहता था कि उसके उम्रदराज दोस्त उसके साथ एवरेस्ट पर चलें, मगर बदकिस्मती से जन्मदिन की रात ही दिल का दौरा पड़ने के कारण भूपेन दुनिया से अलविदा ले लेता है। उसकी अंतिम विदाई के वक्त दोस्तों को पता चलता है कि भूपेन न केवल उन्हें एवरेस्ट के बैस कैंप की ऊचाई का अहसास करना चाहता था बल्कि उसे अपने लड़कपन के उस प्यार के बारे में भी बताना चाहता था, जिसके कारण उनसे जिंदगी भर शादी न करने का फैसला किया था। अब ये सभी दोस्त अपनी बढ़ती उम्र की चुनौतियों के साथ-साथ स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे हैं, मगर दोस्त की खातिर असंभव को संभव बनाने के लिए निकल पड़ते हैं। इन सभी दोस्तों की अपनी-अपनी कहानियां भी हैं। महिलाओं के अंतर्वस्त्र की दुकान चलाने वाले जावेद और उसकी पतिव्रता पत्नी शबाना (नीना गुप्ता) के बीच एक खुबसूरत रिश्ता है, उनकी एक शादीशुदा बेटी हिबा भी है, जबकि ओम की अपनी किताबों की दुकान है, जिसे वो किसी भी कीमत पर मॉल बनाने वालों को नहीं बेचना चाहता। उधर अमित सोशल मीडिया और यूथ के बीच काफी सेलिब्रेटेड राइटर है, मगर उसकी असल जिंदगी में भी

कुछ ऐसे राज हैं, जो उसने अपनी इमेज के कारण छिपा कर रखे हैं। इस दिलचस्प रोड ट्रिप में उनके साथ सहयात्री के रूप में माला (सारिका) भी जुड़ती हैं, मगर तब इन दोस्तों को इस बात का अंदाजा भी नहीं होता कि माला का तार भी कहीं न कहीं उनकी जिंदगियों से जुड़ा हुआ है। इस दुर्गम सफर में उनकी कैप्टेन और मार्गदर्शक के रूप में उनका साथ देती हैं परिणीति चोपडा।

ऊंचाई का रिव्यू

निर्माता-निर्देशक सूरज बड़जात्या पूरे सात सालों बाद ऊंचाई के साथ प्रस्तुत हुए है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि उन्होंने राजश्री के परिवारिक और सांस्कृतिक मूल्य के साथ किसी भी समझौते किए बगैर कहानी को रिलेवेंट बनाया हैं। दिलचस्प बात ये है कि निर्देशक इस यात्रा के जरिए किरदारों की पर्सनल जर्नी को भी बिना किसी भाषणबाजी के आत्मविश्लेषण के जरिए निभा ले जाते हैं। कहानी भले बुजूर्ग चरित्रों के इर्द-गिर्द घूमती है, मगर उसके जरिए सूरज पीढ़ी की सोच और उनकी समस्यायों को भी उपेक्षित नहीं करते। माता-पिता-बच्चे, अंतर-पीढ़िगत कलह को तर्कसंगत रूप से विश्लेषण किया गया है। सूरज ने इस बात को पूरा ख्याल रखा है कि जज्बाती पलों में जब आंखों से आंसू बहें, तो साथ ही ऐसे लाइट मोमेंटस भी आएं, जहां आप हंसे या मुस्कुराए बिना नहीं रह पाते। शास्त्रों में लिखा है हमारे पर्वत, हमारे वेदों के प्रतीक है और ये तो हिमालय है, 'भले ही हम हिमालय के दर्शन न कर सके, पर हम ये न भूले कि हमारे अंदर भी हिमालय की वो शक्ति है जिससे हम जीवन की हर ऊंचाई पार कर सकते हैं, जैसे संवाद दिल की गहराइयों में उतर जाते हैं। फिल्म की तमाम खूबियों में एक कमी है, फिल्म की लंबाई। आज के दौर की फिल्मों के हिसाब से ये फिल्म काफी लंबी है। दिल्ली-आगरा-कानपुर-लखनऊ-गोरखपूर-काठमांडू की यात्रा दिल को छू लेने वाली और सुखद है। फर्स्ट हाफ दमदार है, मगर सेकंड हाफ में कहानी थोड़ी अव्यवस्थित नजर आती है। बैकग्राउंड स्कोर जबरदस्त है। अमित त्रिवेदी के संगीत में इरशाद कामिल के गीत सोलफुल है। मनोज कुमार खटोई का कैमरा लेंस इस रोड ट्रिप के तमाम लोकेशन को खूबसूरत ढंग से दर्शाता है। विभिन्न स्थानों के खान-पान और संस्कृति के दर्शन भी होते हैं।

ऊंचाई : स्टार कास्ट और एक्टिंग

फिल्म में अभिनय का किला सबसे मजबूत है। हर कलाकार अपनी कास्ट में सटीक है और यही वजह है कि सभी के सुर सधे हुए नजर आते हैं। बिग बी के किरदार में कई परतें है और इस केंद्रीय किरदार को जब वे परदे पर निभाते हैं, तो उनके स्टाइल और स्वैग के साथ-साथ इमोशन की गहराई भी नजर आती है। तुनकमिजाज दोस्त की भूमिका में अनुपम खेर वाहवाही लूटे बिना नहीं रहते। नीना गुप्ता इस तरह की परिवारिक भूमिकाओं की सफलता का पैमाना बन चुकी हैं। एक अरसे बाद सारिका को माला के रूप में देखना अच्छा लगता है। बोमन ईरानी अपनी अभिनय की खास अदायगी से जावेद के किरदार को यादगार बना जाते हैं। डैनी छोटी-सी भूमिका में गहरी छाप छोड़ते हैं। परिणीति चोपड़ा अपनी भूमिका के साथ इंसाफ करती हैं।

क्यों देखें - दोस्त और जीवन के मर्म को समझाने वाली इस फिल्म को जरूर देखें।

नैनानिका
सुपुत्री रंजित्त आर
लेखापरीक्षक

शेर और तीन बैल

एक समय की बात हैं। तीन बैल आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। वे साथ मिलकर घास चरने जाते और विना किसी राग-द्वेष के हर चीज आपस में बाँटते थे। एक शेर काफी दिनों से उन तीनों के पीछे पड़ा था, लेकिन वह जानता था कि जब तक ये तीनों एकजुट है तब तक वह उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। शेर ने उन दोनों को एक दूसरे से अलग करने की चाल चली। उसने बौलो के बारे से अफवाह उड़ानी शुरू कर दी। अफवाहें सुन-सुनकर उन तीनों के बीच गलतफहमी पैदा हो गई।

धीरे-धीरे वे एक दूसरे से जलने लगे। आखिरकार एक दिन उनमें झगडा हो गया और वे अलग-अलग रहने लगे। शेर के लिए यह बहुत अच्छा अवसर था। उसने इसका पूरा लाभ उठाया और एक एक करके तीनों को उसने मार डाला और खा गया। एकता में ही शक्ति होती है।

बिजु श्रीधर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पुस्तक परिचय कई दीपों से रोशनी

इस पुस्तक से, आपका परिचय कराने से पहले मैं आप को बताना चाहूंगा कि मैंने इस पुस्तक के बारे में कैसे जाना। भारत के – पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय भारत रत्न डॉ ए.पी जे. अब्दुल कलाम के द्वारा रचित इगनैटीड में इस के दूसरे अध्याय में वे कहते हैं कि चार पुस्तके इनके हृदय के बहुत करीब है। उनमें से एक वो है जिसके बारे में हम यहां चर्चा करने वाले है। डॉ. कलाम कहते हे कि "इस पुस्तक से मुझे बहुत गहरी तरह लगाव हुआ है। यह पुस्तक इस बात पर रोशनी डालती है कि हम कैसे जीते है और मेरे लिए यह पिछले पचास वर्ष एक अनमोल मार्गदर्शक रहा है।"

भारत के इस महान सुपुत्र के खंड पढ़ने के बाद मैं भी उत्सुक हो गया और मैने यह पुस्तक इटरनेट से डाउनलोड किया। अंग्रज़ी में इसका नाम है 'लाईट क्रम मेनी लाए और लेखिका का नाम है लीलीभुन ऐभस मांटस्व। यह पुस्तक 1951 में पहली बार प्रकाशित हुई है और इसमें कई महान लेखक लवी, राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक इत्यादि के जीवन संबधी उपदेशों का अनमोल रत्न एक संकलन में विशेष रूप से दिया गया है। उस पुस्तक के दस भाग है हर भाग में एक विषय पर आधारित लेखन, कविता इत्यादि का संकलन है।

मै यहाँ सिर्फ एक ही ऐसे अनमोल रत्न के बारे में उल्लेख करूँगा वे बहुत वर्ष पहले पूर्व के एक चर्चित रानी जो हर तरह की परेशानी से जूझ रहा था ने अपनी प्रजा सलेह की बैठक बुलाई। राजा ने आग्रह किया कि वे एक ऐसा चमत्कारी सिद्धांत का खोज करे जो हर संकट में रानी की सहायता करें। पर राजा ने यह शर्त रखी कि वह सिद्धांत इतना संक्षिप्त हा कि उसे एक अंगूढी में उत्कीर्ण किया जा सके ताकी की हमेशा उनके आखों के समक्ष है। शर्त और भी थी - सिद्धांत ऐसा हो जो हर समय रानी चाहे समृद्धि या आपदा में हो उपयोगी रहे। बहुत प्रयास के बाद सह सलाहकारों ने अंत में वह सिद्धांत ढूढ ही लिया। रानी के सामने प्रस्तुत होकर प्रजों ने कहा कि उन्होंने जिस सिद्धांत का खोच किया है वह

हर तरह की स्थिति में से थोडे आच्छे या बूरे, हर बदलते समस में सही ठहरेगा और मन को शांती प्रदान करेगा। यह कहते हुए सलाहकारों ने राजा की अँगूठी पर उत्कीर्ण करने के लिए इस सिद्धांत का खुलास किया।

यह, भी गुजर जाएगा

आप थोडा सोच कर देखिए अगर हम इस सिद्धांत को अपने मन के गहराईयों में बिठा ले तो हमारा जीवन कितना सुखद होगा। मनुष्य अपने जीवन काल में कई परिस्थितियों से गुजरना है और अगर हम इस सिद्धांत को भली भांति समझ ले तो हम हर सुख और दुःख का समभाव से सामना कर पाएंगे। समय एक क्षण भी चुकता नही, सदैव आगे बढता रहता है और चलते - चलते परिस्थितियाँ बहुत बदल देती है। इसलिए मेरा मानना है कि भार्तिक शिक्षा के साथ-साथ हमारे बच्चों को उपर्युक्त जैसे सिद्धांतों से भी परिचित करवाना जरूरी है, ताकि वे आगे चलकर घबराए बिना एक अच्छा जीवन बितात में सक्षम हो।

अंत में मैं सभी से अनुरोध करूँगा कि इस पुस्तक को पढ़े और इसका लाभ उठाए।

हेलन तोमस
एमटीएस

प्रकृति संदेश

पर्वत कहता शीश उठाकर
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर
मन में गहराई लाओ।
समझ रहे हो क्या कहती है
उठ उठ गिर गिर तरल तरंग।
भर लो भर लो अपने दिल में
मीठी-मीठी मृदुल उमंग।
पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता हे फैलो इतना
ढक लो तुम सारा संसार।